समाज में नारी उत्पीड़न

22

प्रो0 कांता चौहान*

सृष्टि की जननी मानी जाने वाली औरत युगों–युगों से पुरूषों द्वारा प्रताड़ित की गई है। प्राचीन भारतीय परंपरा में नारी को एक ओर देवी मानकर उसकी पूजा की गई, वहीं उसे दासी बनाकर पुरूष के अधीन रखने का प्रयास भी किया गया। लेकिन जिस समाज में नारी को देवी का रूप माना गया उसी समाज में सीता जैसी पवित्रा नारी को अपनी पतिव्रता के नाम पर अग्नि परीक्षा देनी पड़ी।

द्रौपदी जो पाँच पतियों की पत्नि कहलाती है उसे एक साधरण वस्तु की भाँति जुएं के दांव पर लगा दिया गया। भारतीय परंपरा में नारी से अपेक्षा की गई कि वह पुरूष के लिए त्यागमयी माँ, समर्पित पवित्राता, स्नेहमयी बहन, आज्ञाकारी पुत्राी, रमणीय रम्भा तथा पृथ्वी की तरह हर स्थिति में क्षमाशील बने परंतु इसके बदले पुरूष का क्या कर्त्तव्य है, यह स्पष्ट नहीं किया गया। नारी उत्पीड़न की शुरूआत यहीं से होती है।

नारी उत्पीड़न का अर्थ है उसे उसके अधिकारों से वंचित करना, व्यक्ति न समझकर वस्तु समझना, उसकी उपेक्षा तथा शोषण करना। अगर भारतीय नारी को परखा जाए तो वह घर के सारे काम–काज करते हुए पूरे परिवार की देखभाल करती है, लेकिन उसके इस काम को कोई भी उपयोगी नहीं मानता।

यदि किसी गृहस्थ नारी से पूछा जाए कि वह क्या करती है तो वह एक सरल सा उत्तर देती है, –कुछ नहीं, घर पर रहती हूँ। नौकरी न करने वाली महिला घर के काम को 'कुछ नहीं' मानने लगती है। अगर देखा जाए तो इस काम का मूल्य भावनात्मक दृष्टि से ही नहीं, आर्थिक दृष्टि से भी बहुत अधिक होता है।

भारतीय नारी अपनी इच्छाओं का दमन करके अपने आपको परिवार के लिए पूर्ण रूप से समर्पित कर देती है फिर भी उसे परिवार में आदर न मिले तो यह नारी उत्पीड़न नहीं तो ओर क्या है?

आज हम कहने को तो आधुनिक युग में जी रहे हैं परंतु औरत के लिए यह समाज आज भी वैसा ही है जैसा सालों पहले हुआ करता था, क्योंकि नारी अपने घर में भी सुरक्षित नहीं है। जो समाज अपने आपको आधुनिक कहता फिरता है उसी समाज में दूध मुंही बच्चियों से लेकर नानी–दादी की उम्र की वृद्धाओं के साथ बलात्कार किया जाता है। बड़े शहरों में तो नारी सबसे अधिक असुरक्षित है।

* *एसि0 प्रोफे0 हिंदी, राजकीय महाविद्यालय राजगढ़;हिमाचल प्रदेश*

आजीविका कमाने, स्कूल–कॉलेज जाने व अन्य कार्य करने के लिए जैसे ही नारी घर से बाहर कदम रखती है उसे कई तरह की पुरूष छेड़खानी का सामना करना पड़ता है। उसे पुरूष अपनी बेटी, बहन या माँ के रूप में नहीं देखता, इस सच्चाई को सभी जानते हैं। जिस आधुनिकता का बोझ लेकर हम अपने आपको सभ्य कहते हैं, तो वह सभ्यता किस काम की यदि हम अपनी माँ–बहनों को सुरक्षित नहीं रख पा रहे हैं।

नारी उत्पीड़न का एक और कारण आज की भौतिकवादी सभ्यता भी है। आधुनिक युवा पीढ़ी फिर चाहे वह स्त्री हो या पुरूष दोनों नशे की लत को अपनाकर इंद्रिय सुख को ही सब कुछ मान लेते हैं, वह न अतीत की परवाह करते हैं और न ही भविष्य की चिंता। भौतिकवादी सभ्यता के दिखावे से व नशे की लत के कारण स्त्री के साथ दुर्व्यवहार के अवसर बढ़े हैं।

नारी को इस उत्पीड़न से मुक्ति कैसे मिले? यह प्रश्न हर मनुष्य के जेहन में होना चाहिए और इसका उत्तर भी उसी मनुष्य के पास है जिससे इस समाज का निर्माण हुआ है। यदि हर पुरूष नारी को भोग्या वस्तु न समझकर उसे अपने ही जैसा मनुष्य समझेगा, उसे उतना ही आदर देगा जितना एक पुरूष दूसरे पुरूष को देता है, बिना किसी गलत धरणा के, तो कुछ सीमा तक नारी उत्पीड़न कम हो सकता है।

आज नारी सशक्तिकरण के लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। उसे आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर, भावनात्मक दृष्टि से मजबूत, सजग एवं विवेकशील बनाया जा रहा है। इसके साथ–साथ उसे कानूनी संरक्षण भी मिला है लेकिन इन सब अधिकारों को प्राप्त करने के उपरांत भी वह पुरूष जिसको जन्म देने वाली नारी है, उस पुरूष द्वारा प्रताड़ित की जा रही है।

नारी को स्वयं अपनी पहचान बनाकर समाज में अपनी नींव को मजबूत बनाना होगा। नारी शक्तियों का विकास करने के लिए उसकी बाहरी शक्तियों के साथ–साथ आंतरिक शक्तियों का विकास होना भी आवश्यक है। क्योंकि वही वृक्ष पृथ्वी तल पर बिना किसी सहारे के अकेला खड़ा रहकर कठोर हवा, तूफान व वर्षा के प्रहारों को मलय समीर के झोंको के समान सहकर भी हरा–भरा, फूल फल से युक्त रह सकेगा और उसी की मूल स्थिति दृढ़ रह सकती है जो धरातल से बाहर स्वच्छंद वातावरण में सांस लेता हो।

अतः हर नारी से मेरा निवेदन है कि अपने आपको कमजोर मत समझो। यदि तुम्हारे अंदर त्यागमयी, स्नेहमयी, क्षमाशील आदि जैसी शक्तियां व्यापत है तो तुम्हारे अंदर इस समाज में हर उस भूखे भेड़िए का सामना करने की शक्ति भी है

जो तुम्हें नौच डालना चाहता है, आवश्यकता है तो सिर्फ इस बात की कि तुम उस शक्ति, उस साहस को जगाओ जिससे इस समाज की तस्वीर बदल जाए और उस बदले हुए समाज में नारी भोग की वस्तु या पूज्य देवी के रूप में नजर न आए बल्कि वह पुरूष के समान मनुष्य रूप में दिखाई दे।

संदर्भ–

1 हिंदी व्याकरण 2

2 जीने की कला महादेवी वर्मा